पा ग ल

खलील जिब्रान के The Madman का अनुवाद

अनुवादक
चौधरी शिवनाथसिंह शांडिल्य

नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर

प्रकाशक
गोकुलदास धूत,
नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर

प्रथम बार, १९४५
मूल्य
एक रुपया

मुद्रक
अमरचंद्र,
राजहंस प्रेस, दिल्ली

भूमिका

महाकवि ख़लील जिब्रान बीसवीं शताब्दी के एक महान् विचारक, लेखक और चित्रकार थे। उनकी रचनाएं विश्व-साहित्य की अमूल्य निधि हैं, जिनके अध्ययन से आत्मिक-शान्ति प्राप्त होती है।

प्रसिद्ध आयरिश कवि जार्ज रसेल ने ख़लील जिब्रान की तुलना हमारे रवीन्द्रनाथ से की है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन दोनों महापुरुषों में अनेक विशेषताएं समान रूप से विद्यमान थीं। रवीन्द्र की तरह ख़लील जिब्रान के लिए भी कविता एक ईश्वरीय वरदान थी और इस वरदान का उन्होंने पवित्र कार्य मे उपयोग किया। उनकी रचनाओं से मनुष्यों के चित्त को आनन्द मिला और उनकी आत्मा को उसके दिव्य-स्वरूप का ज्ञान प्राप्त हुआ।

जिस तरह रवीन्द्र ने प्राचीन काल के ऋषि-महर्षियों के अध्यात्म-ज्ञान को अपनी नवीन शैली और भावना-मय शब्दों में व्यक्त किया है, इसी तरह ख़लील जिब्रान ने भी मध्य एशिया के नबी और सन्तों की वाणी को हृदयंगम करके उसे अपनी अपूर्व काव्य-शक्ति द्वारा जीवित कर दिया है।

पागल (The Madman) ख़लील जिब्रान की सर्वोत्कृष्ट पुस्तकों में से एक है, जिसमें लेखक ने बड़े ही कोमल और मर्म-स्पर्शी दृष्टान्तों द्वारा जीवन-रहस्य पर प्रकाश डालते हुए मनुष्य के वास्तविक कर्त्तव्य और आत्मिक पवित्रता के उपदेश दिये हैं। कहने का ढंग ऐसा चमत्कार पूर्ण और हृदयहारी है कि पढ़ने वाला बिना प्रभावित हुए नहीं रह सकता।

पागल (Madman) जैसी पुस्तकों का अनुवाद करना कठिन

कार्य है। मैंने इस पुस्तक के भावार्थ को ठीक-ठीक व्यक्त करने की भरसक चेष्टा की है। मैं इसमें कहांतक सफल हुआ हूं इसका फैसला विज्ञ पाठक करेंगे।

मुझे इस कार्य में मेरे प्रिय नरेन्द्रनाथ और रवीन्द्रनाथ ने बड़ी सहायता दी है। मैं अनुवाद बोलता गया हूं और वे लिखते गये। अतः मैं इन दोनों बालकों को आशीर्वाद देता हूं कि भगवान इन्हें ऐसी सद्बुद्धि प्रदान करें कि भविष्य में हिन्दी भाषा के सच्चे सेवक बन सकें।

मैं नवयुग साहित्य सदन, इन्दौर के योग्य संचालक का भी आभारी हूं, जिनके प्रयत्न से यह पुस्तक इस सुन्दर रूप में प्रकाशित हो सकी है।

मैंने इस रचना में श्री रायकृष्णदासजी के हिंदी अनुवाद तथा श्री बशीर 'हिन्दी' के उर्दू तर्जुमे से लाभ उठाया है, अतः मैं इन दोनों अनुवादकों का अनुगृहीत हूं।

माछरा
१०-१२-४५

शिवनाथसिंह शांडिल्य

लेखक का परिचय

कवि, ज्ञानी और चित्रकार खलील जिब्रान(Khalil Gibran) का जन्म सन् १८८३ ईस्वी में सीरिया देश के माउण्ट लेबनान प्रांत में हुआ था। यह वही प्रांत है जहां यहूदियों के अनेक पैगम्बर पैदा हो चुके हैं। जब कवि की अवस्था बारह वर्ष की हुई तब उनके माता-पिता उन्हें अपने साथ बेल्जियम, फ्रांस और अन्त में अमेरिका ले गये। करीब दो वर्ष उपरान्त वे वापिस सीरिया लौटे और कवि को बेरुत के अल्-हिकमत मदरसे में दाखिल कराया। सन् १६०३ ई० में वह पुनः यूनाइटेड स्टेट्स गये और वहां पांच साल रहकर फ्रांस पहुँचे, जहां उन्होंने चित्रकला का अध्ययन किया। १६१२ ई० में वह फिर अमेरिका गये और फिर जीवन के अंत तक न्यूयार्क में ही रहे।

इस समय में उन्होंने अरबी भाषा में बहुत-सी पुस्तकें लिखीं। कहते हैं कि सीरिया में उनकी पुस्तकों का बहुत आदर हुआ है। लगभग सन् १६१८ से उन्होंने अंग्रेजी में लिखना शुरू किया और और तब से उनकी ख्याति सिर्फ अंग्रेजी-भाषा-भाषी जनता में ही नहीं बल्कि अनुवाद द्वारा सारे यूरोप में फैल गई। यूरोप की करीब बीस भाषाओं में उनकी पुस्तकों के अनुवाद हो चुके हैं।

उनकी तमाम पुस्तकें स्वयं उनके बनाये हुए चित्रों से विभूषित हैं। इन चित्रों का प्रदर्शन पश्चिमी जगत् के सारे देशों की राजधानियों में हो चुका है।

उनकी अंग्रेजी पुस्तकों के नाम और प्रथम प्रकाशन का वर्ष इस प्रकार है:—

दि मैडमैन	...	१९१८
बीस चित्र	...	१९१९
दि फोर रनर	...	१९२०
दि प्राफेट	...	१९२३
सैन्ड एन्ड फोम	...	१९२६
जीसस, दि सन आव मैन	...	१९२८
दि अर्थ-गॉड्स	...	१९३१
दि वान्डरर	...	१९३२
दि गार्डन आव दि प्राफेट	...	१९३३

इस महान् कवि का देहान्त ४८ वर्ष की उम्र में सन् १९३१ में होगया। क्या हम वैसी ही आशा करें जैसी कि उसने अपनी जीवन संदेश (The Prophet) नामक पुस्तक के अन्त में दिखाई है—

"भूल मत जाना मैं फिर वापिस आऊंगा।

"कुछ ही समय उपरांत मेरी संचित वासना नया शरीर धारण करने के लिए मिट्टी और पानी जमा करेगी।"

"कुछ ही समय पश्चात् वायु पर क्षण भर विश्राम लेकर फिर कोई दूसरी माता मुझे धारण करेगी।"

और "उस समय हमारी अधिक बातें होंगी, और तब तुम्हारे भीतर से एक अधिक गूढ़ गीत का आविर्भाव होगा।"

?

पा ग ल

: १ :

मैं पागल कैसे बना ?

तुम पूछते हो कि मैं पागल कैसे बना ? बात यह हुई कि एक दिन---जब बहुत से देवता तो पैदा भी न हुए थे, मैं एक गहरी नींद से जागा और देखा कि मेरे समस्त नक़ाब (आवरण)--वे सातों नक़ाब (आवरण) जो मैंने अपने सात जन्मों में बनाये और पहने थे, चोरी होगये हैं। बस मैं भीड़-भाड़ से भरे हुए मार्गों पर निरावरण ही "चोर ! चोर !! नारकीय चोर !!!" कहता हुआ दौड़ पड़ा। स्त्री और पुरुष मुझे देख कर हंसने लगे, और कुछ मुझे देख कर घरों में जा छिपे।

जब मैं बाजार में पहुंचा तो एक युवक ने जो छत पर खड़ा था चिल्ला कर कहा---"पागल है, पागल है।" उसे देखनेके लिए जब मैंने ऊपर आंखें उठाईं तो पहली बार सूर्य ने मेरे आवरणहीन चेहरे का चुम्बन किया। मेरी आत्मा सूर्य के प्रेम में विह्वल हो उठी और मुझे अपने नक़ाबों की कोई आवश्यकता न रही। मैं सहसा चिल्ला उठा---"भला हो उन लोगों का जिन्होंने मेरे नक़ाब

चुराये हैं।" और इस प्रकार मैं पागल बन गया। और इस पागलपन में मुझे स्वतन्त्रता और सुरक्षा दोनों ही प्राप्त हुए—एकाकीपन की स्वतन्त्रता और अज्ञेयता की सुरक्षा। क्योंकि जो लोग हमें जान जाते हैं वे हमारे कर्त्तव्य के किसी न किसी अंश को गुलाम बना लेते हैं।

परन्तु अपनी सुरक्षा पर मुझे अधिक गर्व नहीं करना चाहिए। बन्दीगृह में बन्द एक चोर भी दूसरे चोर से सुरक्षित रहता है।

: २ :

ईश्वर

प्राचीन काल में जब मेरे होंठ पहली बार हिले तो मैंने पवित्र पर्वत पर चढ़कर ईश्वर से कहा—

"स्वामिन्! मैं तेरा दास हूं। तेरी गुप्त इच्छा मेरे लिए क़ानून है। मैं सदैव तेरी आज्ञा का पालन करूंगा।"

लेकिन ईश्वर ने मुझे कोई जवाब न दिया और वह एक ज़बरदस्त तूफान की तरह तेज़ी से गुज़र गया।

एक हज़ार वर्ष बाद मैं फिर उस पवित्र पहाड़ पर चढ़ा और ईश्वर से प्रार्थना की "परम पिता, मैं तेरी सृष्टि हूं, तूने मुझे मिट्टी से—साधारण मिट्टी से पैदा किया है और मेरे पास जो कुछ है, सब तेरी देन है।"

किंतु परमेश्वर ने फिर भी कोई उत्तर न दिया और वह हज़ार-हज़ार सवेग परों (पक्षियों) की तरह सन से निकल गया।

हज़ार वर्ष बाद मैं फिर उस पवित्र पहाड़ पर चढ़ा और ईश्वर को सम्बोधन करके कहा—"हे प्रभु, मैं तेरी सन्तान हूँ। प्रेम और दया पूर्वक तूने मुझे उत्पन्न किया है। और तेरी भक्ति तथा प्रेम से ही मैं तेरे साम्राज्य का अधिकारी बनूंगा।"

लेकिन ईश्वर ने कोई जवाब न दिया और एक ऐसे कुहरे की तरह जो सुदूर पहाड़ों पर छाया रहता है, निकल गया।

एक हज़ार वर्ष बाद मैं फिर उस पवित्र पहाड़ पर चढ़ा और परमेश्वर को सम्बोधित करके कहा —
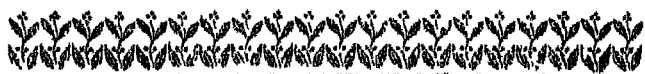
"मेरे मालिक ! तू मेरा उद्देश्य और तू ही मेरी परिपूर्णता है। मैं तेरा विगत-काल और तू मेरा भविष्य है। मैं (पृथ्वी पर) तेरा मूल हूं और तू आकाश में मेरा फूल है और हम दोनों एक साथ सूर्य के प्रकाश में पनपते हैं।"

तब ईश्वर मेरी तरफ़ झुका और मेरे कानों में आहिस्ता से मीठे शब्द कहे और जिस तरह समुद्र अपनी ओर दौड़ती हुई नदी को छाती से लगा लेता है उसी तरह उसने मुझे सीने से लिपटा लिया।

और जब मैं पहाड़ों से उतर कर मैदानों और घाटियों में आया तो मैंने ईश्वर को वहां भी मौजूद पाया।

: ३ :

मेरे दोस्त

मेरे दोस्त ! मैं जो दिखाई देता हूँ वास्तव में वह नहीं हूँ। मेरा प्रकट तो एक-मात्र खोल है जिसे मैं पहने हुए हूँ। यह खोल बड़ी होशियारी से बुना गया है। जो मुझे तुम्हारी विचारणा, और तुम्हें मेरी बेपरवाहियों से बेख़बर रखता है। ख़ामोशी के पर्दों में छिपा हुआ है और हमेशा वहीं छिपा रहेगा। और न कोई इसे अनुभव कर सकेगा और न इस तक कोई पहुँच सकेगा।

मेरे मित्र ! मैं यह नहीं कहता कि जो कुछ मैं कहूँ उसे सच मानो और जो कुछ मैं बोलूं, उसका समर्थन करो। क्योंकि मेरी बातें मेरी नहीं बल्कि तेरे ही विचारों की प्रतिध्वनि हैं। और मेरे कर्म तेरी इच्छाएं हैं जो इस बनावटी लिबास से प्रकट हुई हैं। जब तू कहता है कि हवा का बहाव पच्छिम की ओर है तो मैं कहता हूँ निस्सन्देह पच्छिम की ओर है, क्योंकि मैं तुझे यह बताना नहीं चाहता कि इस वक्त मेरे दिल में हवा के बजाय समुद्र का ध्यान लहरें मार रहा है। तू मेरे विचारों की गहराई तक नहीं पहुँच सकता और न मैं चाहता हूँ कि तू उनकी तह तक पहुँचे। क्योंकि मैं समुद्र पर अकेला ही रहना चाहता हूँ।

मेरे दोस्त ! जब तेरे लिए दिन होता है तब मेरे लिए रात होती है। लेकिन फिर भी मैं उस समय दोपहर की उन सुनहरी किरणों की बातें करता हूँ जो पहाड़ों पर नृत्य करती हैं। और उस लाल वर्ण छाया की बातें करता हूँ जो घाटियों पर आहिस्ता-

आहिस्ता छा जाती है। क्योंकि तू मेरे अन्धकारों के गीत सुन नहीं सकता और न तारों के निकट मेरे पैरों को फड़फड़ाते देख सकता है। और मेरा दिल भी नहीं चाहता कि तू मेरे गीतों को सुन सके और न मेरे पैरों को फड़फड़ा सके। क्योंकि मैं रात के समय अकेला रहना ही पसन्द करता हूँ।

जब तू स्वर्ग की ओर उड़ता है तो मैं नर्क की गहराइयों मे उतर जाता हूँ। उस समय भी तू मुझे पार न होने योग्य झील के किनारे से पुकारता है--

"मेरे दोस्त! मेरे मित्र!!" तो मैं भी तुझे "मेरे दोस्त! मेरे मित्र!!" कह कर जवाब देता हूँ, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि तू मेरे नर्क को देखे। क्योंकि इसकी चिनगारियां तेरी दृष्टि को झुलस देंगी और इसका धुआँ तेरे सांस को रोक देगा। मुझे अपने नर्क से इतना प्रेम है कि मैं नहीं चाहता कि तू वहां आवे। मैं अपने नर्क में अकेला ही जीवन व्यतीत करता हूँ।

मेरे मित्र! तुझे धर्म, सत्य और सौन्दर्य से प्रेम है और मैं भी तेरी ख़ातिर यही कहता हूँ कि इन चीज़ों से मोहब्बत करना उचित और सराहनीय है। लेकिन मैं दिल में तेरी इस मोहब्बत पर हंसता हूँ। इसके बावजूद, मैं नहीं चाहता कि तू मेरी हंसी को देखे। क्योंकि मैं हंसने के लिए भी अकेलापन पसन्द करता हूँ।

मेरे दोस्त! तू दूरदर्शी और अनुभवी है। मैं जानता हूँ कि तू हर बात में अद्वितीय है।

मेरे मित्र! इसलिए मैं भी तुझ से सोच समझ कर बातें

करता हूँ। इसके बावजूद मैं एक पागल हूँ और अपने पागल-पन को छिपाये रखता हूँ। क्योंकि मैं अपने पागलपन से अलग रहना पसन्द नहीं करता।

तू वास्तव में मेरा दोस्त नहीं है। मेरे दोस्त! तुझे मैं यह कैसे समझाऊं कि मेरा मार्ग तेरे मार्ग से भिन्न है। फिर भी हम दोनों परस्पर हाथ में हाथ डाले एक दूसरे के साथ चल रहे हैं।

: ४ :

बिजूका

एक दिन मैंने एक बिजूके से कहा—"कि तुम इस वीरान खेत में खड़े थक गये होगे।" उसने कहा—"जानवरों को डराने का आनन्द इतना अपूर्व और स्थायी है कि मुझे कभी थकान महसूस नहीं होती।"

मैंने एक क्षण सोच कर कहा—"यह सच है। क्योंकि मैंने भी इस आनन्द का अनुभव किया है।" उसने कहा—"हाँ, वही लोग जिनके शरीर में घास फूस भरी हो इस आनन्द को जान सकते हैं।"

यह सुनकर मैं वहां से चल दिया। लेकिन मुझे यह खबर नहीं कि वास्तव में उसने मेरी प्रशंसा की या मज़ाक उड़ाया। एक वर्ष व्यतीत हो गया और इस अर्से में वह बिजूका एक दार्शनिक बन चुका था और जब मैं दूसरी बार उसके क़रीब से गुज़रा तो मैंने देखा कि इसके सर पर दो कौवों ने घोंसला बना रक्खा है।

: ५ :

स्व प्न च र

मैं जिस गांव में पैदा हुआ उसमें एक स्त्री और उसकी पुत्री रहती थी। इन्हें सोते में चलने की बीमारी थी। एक रात जब सारे संसार में निस्तब्धता छायी हुई थी ये मां-बेटी घूमती-घामती अपनी कोहराच्छन्न वाटिका में जा पहुंचीं और वहां परस्पर मिलीं।

मां ने बेटी से कहा—"हां-हां, मुझे पता चल गया। मेरी शत्रु तू है, जिसने मेरा यौवन नष्ट कर दिया है। तू ही है, जिसने मेरे जीवन-खंडहरों पर अपने जीवन-भवन का निर्माण किया है। क्या ही अच्छा होता कि मैं तेरा गला घोट देती!"

बेटी ने कहा—"ऐ स्वार्थी बुढ़िया, तू मेरे और मेरे स्वतन्त्र स्वभाव के बीच एक रोड़े के समान है; कौन मेरे जीवन को तेरे मुरझाये हुए जीवन का प्रतिबिम्ब मानेगा। क्या ही अच्छा हो कि ईश्वर तेरे जीवन का अन्त कर दे।" इसी समय मुर्गे ने बांग दी और दोनों नींद से जागीं।

बुढ़िया ने बड़े प्रेम से कहा—"कौन तुम हो प्यारीबेटी!"

पुत्री ने बड़े प्यार से उत्तर दिया, "हां, मेरी प्यारी अम्मा"

: ६ :

बुद्धिमान कुत्ता

एक दिन एक बुद्धिमान कुत्ता बिल्लियों के एक झुण्ड के पास से गुज़रा। उसने देखा कि बिल्लियां अपने आप में मस्त हैं और उसकी तरफ ध्यान नहीं देतीं। इसलिए वह उनकी बातें सुनने के लिए रुक गया। फिर उनमेंसे एक बड़ी और भारी भरकम बिल्ली उठी और अन्य बिल्लियों पर निगाह डालकर कहा, "बहनों, ईश्वर से प्रार्थना करो। क्योंकि जब तुम पूरी श्रद्धा के साथ बार-बार विनती करोगी तो आकाश से सचमुच चूहों की वर्षा होगी।"

जब कुत्ते ने यह बात सुनी तो अपने दिल में हँसा और मुँह मोड़कर यह कहता हुआ चला गया—"अरी अन्धी और मूर्ख बिल्लियो! क्या यह किताबों में नहीं लिखा और खुद तुम्हें और तुम्हारे बाप-दादों को यह मालूम नहीं कि जब ईश्वर की पूजा करने और दुआयें मांगने से बारिश होती है, तो आसमान से चूहे नहीं बल्कि हड्डियां बरसती हैं।"

: ७ :

दो साधु

एक पहाड़ पर दो साधु रहते थे। उनका काम ईश्वर की पूजा और आपस में प्रेम पूर्वक रहने के सिवा और कुछ न था। उनके पास एक मिट्टी का प्याला था और यही उन दोनों की पूंजी थी। एक दिन बड़े साधु के दिल में बदी की रूह दाखिल हुई। वह छोटे साधु के पास आया और उससे कहा—"हम दोनों को साथ रहते हुए बहुत समय बीत गया और अब अलग होने का अवसर आ गया है। इसलिए आओ हम अपनी सम्पत्ति बांट लें।"

छोटे साधु ने कहा—"तुम्हारा वियोग मेरे लिए असह्य है किन्तु यदि तुम जानाही चाहते हो तो अच्छी बात है।" यह कहकर उसने वह प्याला बड़े साधु के सामने लाकर रख दिया और कहा—"हम इसे आपस में बांट नहीं सकते इसलिए यह प्याला आप ही लेलें।" बड़े साधु ने जवाब दिया कि नहीं, मैं ख़ैरात नहीं मांगना चाहता। मैं अपने हिस्से के सिवा और कुछ नहीं लूंगा। हमें यह प्याला आपस में बांटना ही पड़ेगा।

छोटे साधु ने कहा—"यदि यह प्याला टूट गया तो हमारे किस काम आयेगा। यदि तुम मंज़ूर करो तो आओ पासा डालकर इसका फैसला करलें।"

लेकिन बड़े साधु ने दूसरी बार कहा—"मैं केवल वही चीज़ लूंगा जो इन्साफ़ से मेरे हिस्से में आयेगी और मैं यह पसन्द नहीं करता कि न्याय को भाग्य पर छोड़ दिया जाय। हमें यह प्याला

अवश्य बांटना पड़ेगा।"

इस पर छोटा साधु निरुत्तर हो गया और उसने कहा, "यदि तुम्हारी यही इच्छा है तो लाओ इस प्याले को तोड़ डालें।"

यह सुन कर बड़े साधु का चेहरा क्रोध से लाल हो गया और वह चिल्लाकर बोला, "ओ कायर मनुष्य! क्या तू इस प्याले के लिए मुझ से लड़ेगा भी नहीं।"

: ८ :

आदान प्रदान

एक मनुष्य के पास इतनी सुइयां थीं कि इनसे एक मैदान ढक सकता था। एक दिन मरियम उसके पास आई और बोली—"भाई मेरे बेटे के वस्त्र फट गये हैं और मैं मन्दिर में जाने से पहले उसके कपड़ों की मरम्मत करना चाहती हूँ। क्या तुम मुझे एक सुई दे सकते हो?"

उसने मरियम को सुई न दी। लेकिन आदान-प्रदान के सम्बन्ध में एक विद्वत्ता-पूर्ण व्याख्यान देकर कहा कि मन्दिरमें जाने से पहले अपने बेटे को यह व्याख्यान सुना देना।

: ६ :

सात आपे

रात की सब से खामोश घड़ी में जब मैं अध-सोया पड़ा था—मेरे सातों आपे एक साथ बैठ कर इस तरह काना-फूसी करने लगे—

पहला आपा—"यहां, इस पगले में मैं इतने बरसों तक रहा हूँ। इस अर्से में मेरा काम इसके सिवा और कुछ न था कि मैं दिन को उसका दर्द ताज़ा करूं और रात को उसका दुःख नये सिरे से पैदा करूं। ये रोज़ की मुसीबत मुझसे सही नहीं जाती और अब मैं बग़ावत करने पर तुला हुआ हूँ।"

दूसरा आपा—"तुम्हारी तकदीर मुझसे अच्छी है भाई! क्योंकि मुझे इस मनुष्य का आनन्दमय आपा बनाया गया है। मैं इसको हंसी हंसता हूँ और इसकी खुशी की घड़ियों के राग अलापता हूँ और अपने पैरों के तीन-तीन पंख लगा कर इसके उज्वल विचारों के साथ नाचता हूँ। अब मैं अपने इस दुःख-भरे जीवन के विरुद्ध विद्रोह करूंगा।"

तीसरा आपा—"और मुझ प्रेमासक्त आपे के विषय में क्या! मैं तो जघन्य वासनाओं और बहुरूप कामनाओं की उद्दीप्त मूर्त्ति हूँ। यह तो मेरा काम है कि मैं इसके प्रति विद्रोह करूं।"

चौथा आपा—"मैं तुम सब से ज्यादा दुःखी हूँ क्योंकि मुझे कुत्सित घृणा और विनाशक भावनाओं के सिवा और कुछ नहीं दिया गया। मैं, तूफान सदृश आपा, जिसका जन्म नरक

की अन्धेरी गुफाओं में हुआ, इस पगले की गुलामी का विरोध करूंगा।"

पाँचवां आपा—"मैं (निरन्तर) विचार करने वाला आपा, और (सदा) कल्पना में मग्न रहने वाला आपा जिसकी तकदीर में अज्ञात और बिना पैदा हुई चीज़ों की तलाश में बिना चैन लिये घूमना लिखा है। मैं बग़ावत करूंगा तुम नहीं।"

छठा आपा—"और मैं काम करने वाला आपा, दीन मज़दूर जो थके मांदे हाथों और प्यासी आंखों से, अपने दिनों को मूर्तियों में बदल देता हूँ, और ऐसे तत्वों को, जिनका कोई रूप न हो, नया और स्थायी रूप देता हूँ। मैं इस अथक पगले के विरुद्ध विद्रोह करूंगा।"

सातवां आपा—"कितनी अजीब बात है कि तुम में से प्रत्येक के भाग्य में जो लिख दिया है उसे तुम्हें पूरा करना है। काश, कहीं मैं भी तुम्हारी तरह ही मुकर्रर तकदीर वाला आपा होता। परन्तु मेरे भाग्य में कुछ भी नहीं लिखा है। मैं एक बेकार आपा हूँ और जब तुम जीवन-चक्र-चलाने में व्यस्त रहते हो तो मैं एक बे-नाम और बे-निशान जगह पर खामोश बैठा रहता हूँ। ए मेरे पड़ौसियों, बताओ भला विद्रोह मुझे करना चाहिए या तुम्हें।"

जब सातवें आपे ने यह कहा तो दूसरे छः आपे उसकी ओर दया-दृष्टि से देखने लगे, परन्तु आगे कुछ न कहा और जैसे-जैसे रात गम्भीर होती गई वैसे ही वे एक नई और खुशी से भरी हुई गुलामी से परिपूर्ण होकर सो रहे।
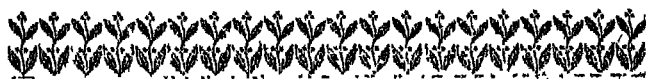
लेकिन सातवां आपा (उस) अभाव को जो प्रत्यक्ष (दृष्टि-गोचर होने वाली) वस्तुओं के पीछे छिपा हुआ है, टकटकी लगाये घूरता ही रहा।

: १० :

युद्ध

एक रात शाहीमहल में एक दावत हुई। इस मौक़े पर एक आदमी आया और अपने आपको शहज़ादे के सामने पेश किया। सारे मेहमान उसकी तरफ़ देखने लगे। उन्होंने देखा कि उसकी एक आंख बाहर निकल आई है और जख्म से खून बह रहा है।

बादशाह ने पूछा—"तुम्हारे साथ यह दुर्घटना कैसे हुई?"

उसने जवाब दिया—"मैं एक पेशेवर चोर हूँ और पिछली रात जब कि चांद भी नहीं निकला था, मैं एक साहूकार की दुकान में चोरी करने के लिए गया, किंतु भूल से जुलाहे के घर में पहुँच गया। ज्योंही मैं खिड़की में से कूदा, मेरा सिर जुलाहे के करघे से टकरा गया और मेरी आंख फूट गई। ऐ शहज़ादे! मैं अब इस जुलाहे के मामले में इन्साफ़ चाहता हूँ।"

यह सुनकर शहज़ादे ने जुलाहे को तलब किया और यह फ़ैसला दिया कि इसकी एक आंख निकाल दी जाय।

जुलाहा बोला—"ऐ शहज़ादे! आपका यह न्याय उचित नहीं है कि मेरी एक आंख निकलवा रहे हैं। मेरे काम में दोनों आंखों की ज़रूरत है ताकि मैं उस कपड़े को दोनों तरफ़ देख सकूं, जिसे मैं बुनता हूं। मेरे पड़ोस में एक मोची है। उसके दो आंखें हैं। लेकिन उसे अपने काम के लिए दोनों आंखों की ज़रूरत नहीं।"

यह सुनकर शहज़ादे ने मोची को तलब किया। वह आया, और उसकी दो आंखों में से एक आंख निकाल दी गई।

इस तरह उनकी दृष्टि में इन्साफ़ का तक़ाज़ा पूरा हो गया।

: ११ :

लो म ड़ी

एक लोमड़ी ने सुबह के वक्त अपनी छाया पर दृष्टि डाली और कहा—"मुझे आज कलेवे के लिये एक ऊंट मिलना चाहिए।

उसने सुबह का सारा समय ऊंट की तलाश में घूमते हुए व्यतीत कर दिया, लेकिन जब दोपहर को उसने दूसरी बार अपनी छाया देखी तो कहा—मेरे लिए एक चूहा ही काफ़ी होगा।

: १२ :

बुद्धिमान बादशाह

एक बार का ज़िक्र है कि एक शहर पर, जिसका नाम वीरानी था एक बादशाह हकूमत करता था। उसकी वीरताके कारण लोग उससे डरते थे और उसकी बुद्धि की चतुराई की वजह से उससे प्रेम करते थे।

उस शहर के बीच में एक कुआँ था, जिसका पानी बहुत ठण्डा और मोती की तरह निर्मल था। उस नगर के समस्त निवासी बल्कि स्वयं बादशाह और उसके दरबारी इसी कुएँसे पानी पीते थे, क्योंकि उसके सिवा शहर में कोई दूसरा कुआँ भी न था। एक रातको जब सब लोग सोये हुए थे, एक चुड़ैल शहर में घुस आई और एक अद्भुत औषधि की सात बूंद कुएँ में डाल दीं और बोली—इसके बाद जो मनुष्य इस कुएँ का पानी पीयेगा, वह पागल हो जायगा।

दूसरे दिन बादशाह और मंत्रियों के अतिरिक्त नगर के समस्त निवासियों ने कुए का पानी पिया और चुड़ैल की भविष्य-वाणी के अनुसार पागल हो गये। –

उस दिन शहर के तंग गली-कूचों और बाज़ारों में लोग एक दूसरे के कान में यही कहते रहे कि हमारे बादशाह और प्रधान मन्त्री की बुद्धि नष्ट होगई है। हम इस अपाहिज बादशाह के शासन को सहन नहीं कर सकते और इसे तख्त से उतार देंगे।

जब शाम हुई तो बादशाह ने सोने के एक बर्तन में इस कुएँ से पानी मँगवाया और जब पानी आया तो उसने स्वयं भी

उसे पिया और अपने प्रधान मन्त्री को भी पिलाया। फिर क्या था, शहर वीरानी में खुशी के बाजे बजने लगे। क्योंकि लोगों ने देखा कि उनके बादशाह और प्रधान मन्त्री की बुद्धि ठिकाने आगई है ।

: १३ :

उ च्चा कां क्षा

तीन आदमी एक क़हवाखाने की मेज़ पर बैठे हुए थे। उनमें से एक जुलाहा, दूसरा बढ़ई और तीसरा एक मज़दूर था।

जुलाहे ने कहा—"मैंने आज एक बढ़िया लट्ठे का कफ़न दो अशर्फ़ियों में बेचा है। आओ, हम सब ख़ूब शराब पियें।"

बढ़ई ने कहा—"मैंने आज एक उत्तम शव-मंजूषा बेची है, इसलिए हम शराब के साथ क़बाब भी खावें।"

मज़दूर ने कहा—"मैंने आज केवल एक ही क़ब्र खोदी है परन्तु मृतक के वारिसों ने मुझे दुगने पैसे दिये हैं। इसलिए आओ हम थोड़ी मिठाई भी मगावें।" उस रात क़हवाखाने में ख़ूब रौनक़ रही और तीनों मनुष्य शराब, कबाब और मिठाइयां उड़ाते रहे, क्योंकि वह तीनों बड़े आनन्द में थे।

क़हवाखाने का स्वामी ख़ुश होकर अपनी पत्नी की ओर देख रहा था क्योंकि आज के महमान दिल खोल कर खर्च रहे थे।

जब सब क़हवाखाने से निकले तो चांद निकल आया था। और वह सड़क पर गाते-चिल्लाते और ज़ोर-ज़ोर से बातें करते हुए चले जा रहे थे। दूकानदार और उसकी पत्नी क़हवाखाने के दरवाज़े पर खड़े हुए उन्हें देख रहे थे।

पत्नी ने कहा—"यह लोग कितने उदार और मौजी स्वभाव के हैं। अगर यह उदाराशय ग्राहक रोज़ हमारे यहां आवें तो हमारे

पुत्र को शराब की दूकान न करनी पड़े और हम अपनी आमदनी से उसे उच्च शिक्षा दिला सकते हैं। वह एक पादरी भी बन सकता है।

: १४ :

नई खुशी

कल रात मैंने एक नई खुशी का आविष्कार किया और जब मैं पहले-पहिल उसका उपभोग कर रहा था तब एक देव और एक शैतान मेरे घर की ओर झपटते हुए आये। वह मेरे दरवाज़े पर एक दूसरे से मिले और मेरी नूतन रचना के सम्बन्ध में परस्पर झगड़ने लगे।

एक कहता था—"यह पाप है।"

दूसरा कहता था—"यह पुण्य है।"

: १५ :

दूसरी भाषा

अपने जन्म के तीन दिन बाद जब मैं रेशमी पालने में पड़ा हुआ अपने चारों ओर नये संसार को आश्चर्य से देख रहा था, तो मेरी मां ने अन्ना से पूछा—"कैसा है मेरा लाल ?"

अन्ना ने जवाब दिया—"देवि, बच्चा बहुत अच्छा है। मैंने उसे तीन बार दूध पिलाया है। मैंने आज तक ऐसा बच्चा नहीं देखा जो इतना खुश हो।"

मैं व्याकुल होकर चिल्ला उठा—"मां, यह सच नहीं। क्योंकि मेरा बिछौना सख्त है और मैंने जो दूध पिया है वह मेरे मुँह को कड़वा लगा है और मेरी अन्ना के वक्ष की गन्ध मेरे लिए बड़ी कष्टप्रद है। मैं बड़ा दुःखी हूँ।

लेकिन मेरी बात न मेरी मां समझ सकी, न मेरी अन्ना। क्योंकि मैं जिस भाषा में बोल रहा था वह संसार की भाषा नहीं थी। वह उस दुनिया की ज़बान थी जहां से मैं आया था।

इक्कीसवें दिन हमारे यहां मुल्ला आया और उसने मेरी मां से कहा—"तुम्हें खुश होना चाहिए क्योंकि तुम्हारा बेटा जन्मजात धर्मशील है।"

उसकी यह बातें सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने मुल्ला से कहा—"फिर तुम्हारी स्वर्गीय माता को अफ़सोस होना चाहिए। क्योंकि तुम जन्मजात धर्मशील नहीं थे।" लेकिन मुल्ला भी मेरी भाषा को न समझ सका।

सात महीने बाद एक दिन मुझे एक ज्योतिषी ने देखा और मां से कहा—"तुम्हारा बेटा बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ होगा और संसार के लोगों के लिए पथ-प्रदर्शक बनेगा।"

यह सुनकर मैं चीख़ उठा—"यह भविष्यवाणी बिल्कुल असत्य है। क्योंकि मैं एक गवैये के अतिरिक्त कुछ नहीं बनूंगा।"

लेकिन इस आयु में भी मेरी भाषा को कोई न समझ सका। मुझे महान आश्चर्य हुआ और अब मेरी आयु ३३ वर्ष की है और मेरी मां, मेरी अन्ना और मुल्ला सब मर चुके हैं। लेकिन वह ज्योतिषी अभी तक जीवित है और मुझे कल देवालय के दरवाज़े के निकट मिला। जब हम एक दूसरे से बातें कर रहे थे, तो उसने कहा—"मैं शुरू ही से जानता था कि तुम एक गायक बनोगे। मैंने तुम्हारे बचपन में ही यह भविष्यवाणी की थी।

मैंने उसकी बात पर विश्वास कर लिया, क्योंकि अब मैं स्वयं अपनी पहली भाषा को भूल चुका हूँ।

: १६ :

अनार

एक बार जब मैं एक अनार के हृदय में वास करता था, तो मैंने एक बीज को यह कहते हुए सुना—"किसी दिन मैं एक वृक्ष बन जाऊंगा, वायु मेरी टहनियों में राग गायेगी, सूर्य की किरणें मेरे पत्तों पर नृत्य करेंगी और मैं प्रत्येक ऋतु में सुन्दर और स्वस्थ बना रहूँगा।"

फिर दूसरा बीज बोला—"जब मैं तुम्हारी तरह नवयुवक था तो मेरे भी यही विचार थे परन्तु अब, जब कि मैं सारी वस्तुओं का ठीक-ठीक अनुभव कर सकता हूँ, तो पाता हूँ कि मेरी वह सब आशाएं निराधार थीं।

तीसरा बीज बोला—"हम में कोई भी बात ऐसी नहीं है जिससे हमारा भविष्य उज्ज्वल प्रतीत हो।"

चौथे ने कहा—"परन्तु एक आशापूर्ण भविष्य के बिना हमारा केवल एक स्वांग होगा।"

पांचवें ने कहा—"जब हम इस बात से ही बेख़बर हैं कि हम स्वयं क्या हैं, तो फिर इस बात पर विवाद करना ही निरर्थक है कि हम भविष्य में क्या बनेंगे।"

छठे ने कहा—"हम जो कुछ हैं, वही सदैव रहेंगे।"

सातवें ने कहा—"मुझे भविष्य में होने वाली घटनाओं का पूरा-पूरा ज्ञान है। परन्तु मैं उन्हें शब्दों द्वारा वर्णन करने में असमर्थ हूँ।"

इसके बाद आठवां बोला—"और फिर नवां और दसवां यहां तक कि सारे बीज इस वाद-विवाद में जुट गये। मैं इन अन-गिनत आवाज़ों में किसी के भी शब्द स्पष्ट नहीं सुन सका, इसी-लिए मैं उस दिन एक कली के हृदय में बैठ गया जिसमें बीज भी थोड़े हैं और जो ज़्यादा बातचीत भी नहीं करते।

: १७ :

दो पिंजड़े

मेरे पिता के बाग़ में दो पिंजड़े हैं। उनमें से एक में शेर बन्द है जिसे मेरे पिता के गुलाम आनिवा के रेगिस्तान से पकड़ कर लाये थे, दूसरे में एक निस्संगीत गौरैया।

प्रत्येक दिन सुबह के वक़्त गौरैया सिंह से पुकार कर कहती है—"भैया क़ैदी! तुम्हारे लिए आज की प्रातः मुबारिक हो।"

: १८ :

तीन चींटियां

एक आदमी धूप में पड़ा सो रहा था कि तीन चींटियां उसकी नाक पर आ इकट्ठी हुईं और अपने-अपने ख़ानदान की प्रथा के अनुसार अभिवादन करने के बाद परस्पर वार्तालाप करने लगीं।

पहली चींटी ने कहा—"मैंने इन पहाड़ों और घाटियों से ज्यादा बंजर जगह और कोई नहीं देखी। मैंने यहां सारे दिन दानों की तलाश की है। लेकिन मुझे एक दाना भी नहीं मिला।"

दूसरी चींटी ने कहा—"मुझे भी कुछ नहीं मिला यद्यपि एक-एक चप्पा छान मारा। मेरे ख़याल से यह वही कोमल और अस्थिर भूमि है जिसके बारे में हमारे जाति वाले कहते हैं कि यहां कुछ पैदा नहीं होता।"

इसके बाद तीसरी चींटी ने अपना सिर उठाया और कहा "मेरी सहेलियो! इस समय हम बड़ी चींटी की नाक पर बैठे हैं। जिसका शरीर इतना बड़ा है कि हम उसे नहीं देख सकते। इसकी छाया इतनी विस्तृत है कि हम उसका अनुमान नहीं कर सकते। इसकी आवाज़ इतनी ऊंची है कि हमारे कान इसे सहन नहीं कर सकते और वह हर जगह मौजूद है।"

जब तीसरी चींटी ने यह बात कही तो दूसरी चींटियों ने एक-दूसरे को देखा और ज़ोर से हंसीं। ठीक उसी समय आदमी नींद में हिला। उसने सोते-सोते में अपने हाथ से नाक को खुजलाया और तीनों चींटियां पिस कर रह गईं।

: १६ :

कब्र खोदने वाला

एक बार जब मैं, एक मृतक दास को दफ़न कर रहा था, तो कब्र खोदनेवाला मेरे पास आया और बोला—"जितने भी लोग यहां दफ़न करने के लिए आते हैं, उनमें से, मैं सिर्फ़ तुम्हें पसन्द करता हूं।"

मैंने कहा, "यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। लेकिन आख़िर तुम मुझे क्यों पसन्द करते हो?"

उसने जवाब दिया—"बात यह है कि और लोग तो यहां रोते हुए आते हैं और रोते हुए जाते हैं। मगर तुम हंसते हुए आये और हंसते हुए जा रहे हो।"

: २० :

मन्दिर की सीढ़ियों पर

कल शाम मैंने मन्दिर की संगमरमर की सीढ़ियों पर एक स्त्री को बैठे देखा। उसके दोनों तरफ़ दो मनुष्य बैठे हुए थे। उस स्त्री का एक गाल पीला पड़ रहा था और दूसरे पर लाली दौड़ रही थी।

: २१ :
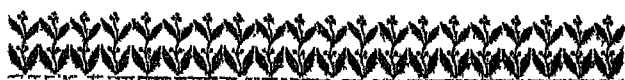
पवित्र नगर

मैं अपने यौवन-काल में सुना करता था कि एक ऐसा शहर है, जिसके निवासी ईश्वरीय पुस्तकों के अनुसार धार्मिक-जीवन व्यतीत करते हैं। मैंने कहा—"मैं इस शहर की ज़रूर खोज करूंगा और उससे कल्याण-साधन करूंगा।"

यह शहर बहुत दूर था। मैंने अपने सफर के लिए बहुत-सा सामान जमा किया। चालीस दिन के बाद मैंने उस शहर को देख लिया और इकतालीसवें दिन उस शहर में दाखिल हुआ।

मुझे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि नगर के सब निवासियों के केवल एक हाथ और एक आंख थी।

मैंने यह भी अनुभव किया कि वह स्वयं भी आश्चर्य में डूबे हुए हैं। मेरे दो हाथों और दो आंखों ने उन्हें आश्चर्य में डाल दिया था। इसलिए जब वह मेरे सम्बन्ध में आपस में बातचीत कर रहे थे तो मैंने एक से पूछा—"क्या यह वही पवित्र नगर है, जिसका प्रत्येक निवासी धार्मिक-जीवन व्यतीत करता है।"

उन्होंने उत्तर दिया—"हां, यह वही नगर है।"

मैंने पूछा—"तुम्हारी यह दशा क्यों कर हुई? तुम्हारी दाहिनी आंख और दाहिना हाथ क्या हुए?"

वह मेरी बात से बहुत प्रभावित हुआ और बोला—"आ, और देख।"

वह मुझे एक देवालय में ले गये, जो शहर के बीच में स्थित

था। मैंने उस देवालय के चौक में हाथों और आंखों का एक बड़ा ढेर लगा देखा। वह सब गल-सड़ रहे थे। यह देख कर मैंने कहा—"अफ़सोस, किसी निर्दयी विजेता ने तुम्हारे साथ यह अत्याचार किया है !"

इतना सुन कर उन्होंने आपस में धीरे-धीरे बातचीत करनी शुरू की और एक वृद्ध आदमी ने आगे बढ़कर मुझ से कहा—"यह हमारा काम है। किसी विजेता ने हमारी आंख व हाथ नहीं काटे। ईश्वर ने हमें अपनी बुराइयों पर विजय प्रदान की है।" यह कहकर वह मुझे एक ऊंचे स्थान पर ले गया। बाकी सब लोग हमारे पीछे थे। यहां पहुँचकर मम्बर के ऊपर एक लेख दिखाया, जिसके शब्द यह थे:—

"यदि तुम्हारी दाहिनी आंख तुम्हें ठोकर खिलाये तो उसे बाहर निकाल फेंको। क्योंकि सारे शरीर के नर्क में पड़े रहने की अपेक्षा एक अंग का नष्ट होना अच्छा है। और यदि तुम्हारा दाहिना हाथ तुम्हें बुराई करने के लिए विवश करे तो उसे भी काटकर फेंक दो ताकि तुम्हारा केवल एक अंग नष्ट हो जाय और सारा शरीर नर्क में न पड़ने पाये।"

यह लेख पढ़ कर मुझे सारा रहस्य मालूम हो गया। मैंने मुंह फेरकर सब लोगों को सम्बोधन किया और कहा—"क्या तुममें कोई पुरुष या स्त्री ऐसा नहीं जिसके दो हाथ और दो आंखें हों ?"

सब ने उत्तर दिया—"नहीं, कोई नहीं।" यहां बालकों के अतिरिक्त, जो कम उम्र होने के कारण इस लेख को पढ़ने और इसकी आज्ञाओं के अनुसार कार्य करने में असमर्थ हैं,

वही अन्धे हैं। कोई मनुष्य नहीं।"

जब हम देवालय से बाहर आये तो मैं तुरन्त इस पवित्र नगर से भाग निकला, क्योंकि मैं बच्चा नहीं था और उस शिला-लेख को अच्छी तरह पढ़ सकता था।

: २२ :

नेकी और बदी का फ़रिश्ता

नेकी और बदी के फ़रिश्ते पहाड़ की चोटी पर मिले।

नेकी के फ़रिश्ते ने कहा—"आज की सुबह तुम्हें आनन्ददायक हो।"

बदी के फ़रिश्ते ने इसका कोई उत्तर न दिया।

नेकी के फ़रिश्ते ने फिर कहा—"आज आपकी तबियत कुछ अच्छी नहीं मालूम देती!"

बदी के फ़रिश्ते ने कहा—"बहुत दिन से लोग मुझे तुम्हारी जगह समझने लगे हैं। मुझे तुम्हारे ही नाम से पुकारते हैं और तुम्हारा जैसा व्यवहार करते हैं। यह बात मुझे बहुत नागवार है।"

नेकी के फ़रिश्ते ने कहा—"मुझमें भी तो लोगों को तुम्हारा धोखा हुआ है और वह मुझे तुम्हारे नाम से पुकारने लगे हैं।"

यह सुनकर बदी का फ़रिश्ता मनुष्यों की बेअक़्ली पर घृणा प्रकट करता हुआ वहां से चला गया।

: २३ :

पराजय

पराजय, मेरी पराजय, मेरी तनहाई, मेरा एकाकीपन !

तू मुझे हज़ारों विजयों से भी प्यारा है ।

और मेरे हृदय के लिए, सारे संसार के वैभव से मीठा है ।

पराजय, मेरी पराजय, मेरे आत्म-बोध, मेरे मुकाबला करने के साहस !

तेरे ही वजह से मैं जानता हूँ कि मैं अभी युवक हूँ और मेरे क़दमों में तेज़ी है ।

और एक क्षण में मुरझाने वाली सफलताओं के जाल में नहीं फंसता ।

तुझ में मैंने तनहाई (अकेलेपन का आनन्द) पाई है ।

और लोगों ने मुझसे बचने और घृणा करने का सुख भी प्राप्त किया है ।

पराजय, मेरी पराजय, मेरी चमकती तलवार, मेरी ढाल !

मैंने तेरी आंखों में पढ़ा है कि राज-सिंहासन पर बैठना गुलामी का चिह्न है ।

और (दूसरों से) पहचाने जाना ख़ाक में मिल जाने के बराबर है ।

और पकड़ में आजाना फलने-फूलने की अन्तिम सीमा है ।

और पके फल की तरह टपक कर गल-सड़ जाना है ।

पराजय, मेरी पराजय, मेरे बहादुर साथी ! तू ही मेरे गीत,

मेरी आहें, और मेरी ख़ामोशी की आवाज़ सुनेगा।

और तेरे सिवा अन्य कोई भी मुझसे परों की फड़फड़ाहट की ज़िक्र न करेगा।

इस समुद्र की आवाज़ (की चर्चा न करेगा)।

और (न तेरे सिवा अन्य कोई) उन पहाड़ों का (ज़िक्र करेगा) जो रात को जलते हैं।

हां, केवल तू ही मेरी पथरीली आत्मा की सवारी करेगा।

पराजय, मेरी पराजय, मेरे न मिटने वाली हिम्ममत।
मैं और तू मिलकर तूफ़ान के साथ क़हक़हे लगावेंगे।
और साथ ही उन सबकी कब्र खोदेंगे, जो हममें से मरेंगे।
हम धूप में पक्के इरादे के साथ खड़े होंगे।
और हम (दुनिया के लिए) ख़तरनाक बन जावेंगे।

: २४ :

रात और पागल

"मैं तेरे ही जैसा हूँ। ओ रात्रि! नग्न और अंधेरी! मैं एक ऐसे तपते हुए मार्ग पर चलता हूँ जो मेरे दिन के स्वप्नों से उच्चतर है और मेरा पांव जमीन को छूता है तो उससे एक प्रकांड बान-वृक्ष (ओक का पेड़) उठ पड़ता है।"

"नहीं, तू मेरे जैसा नहीं है ऐ पगले! क्योंकि तू अब भी पीछे फिर कर देखता है कि रेत पर तूने कितने बड़े-बड़े पद-चिह्न छोड़े हैं!"

"मैं तेरे जैसा हूँ ऐ रात्रि! खामोश और गम्भीर। मेरे एकाकीपन(तनहाइयां)के हृदय में एक देवी खटोले पर लेटी है, जिसके पेट से पैदा हुआ बच्चा स्वर्ग को नरक से मिलाता है।"

"नहीं, तू मेरे जैसा नहीं है। ओ पागल! क्योंकि तू दुःखो की कल्पना से कांप उठता है और नरक के गीतों से भयभीत हो जाता है।"

"मैं तेरे जैसा हूँ ओ रात्रि! डरावना और भयानक! क्योंकि मेरे कान विजित जातियों के क्रंदन और भूले हुए देशों की चीखों और भूले हुए देशों की आहों से भरे हैं।"

"नहीं, तू मेरे जैसा नहीं है ओ पागल! क्योंकि तू अपने छोटे मन को तो अपना साथी बना लेता है लेकिन अपने विराट स्वरूप से दोस्ती नहीं कर सकता।"

"मैं तेरे जैसा हूँ ओ रात्रि! क्रूर और अत्याचारी! क्योंकि

मेरा हृदय समुद्र मे जलते हुए जहाजों से रोशन है और मेरे ओठ वध किये हुए वीरों के खून से भीगे हुए हैं।"

"तू मुझ जैसा नहीं है ओ दीवाने! क्योंकि तेरे हृदय में एक आत्मीय की कामना है और तू अपने लिए कोई नियम नहीं बना सकता।"

"मैं तेरे जैसा हूँ ओ रात्रि! प्रसन्न और आनन्द, क्योंकि जो मेरी छाया में निवास करता है वह एक अछूती मदिरासे उन्मत्त है। और मेरी अनुचरी खुशी से (निःसंकोच) गुनाह करती है।"

"तू मेरे समान नहीं है ओ पागल! क्योंकि मेरी आत्मा पर सात परदों का आवरण चढ़ा हुआ है। और तेरा मन तेरे वश में नहीं है।"

"मैं तेरे जैसा हूँ ओ रात्रि! सन्तोषी और कामना-पूर्ण क्योंकि मेरे दिल में हजारों मृत प्रेमी मुरझाये हुए चुम्बनों का कफ़न पहने दफ़न हैं।"

"हां, पगले! क्या तू मेरे जैसा है? क्या तू (वास्तव में) मेरे जैसा है। क्या तू तूफ़ान को घोड़ा बनाकर सवारी करता है? और बिजली को तलवार की तरह (हाथ में) लेता है?"

"तेरे समान ओ रात्रि! तेरी तरह बलवान और उच्च! मेरा तख्त पतित-देवताओं के ढेर पर बना है और मेरा पल्ला चूमने के लिए मेरे सामने से दिन गुजरते हैं, लेकिन मेरे चेहरे को देखने के लिए नहीं।"

"क्या तू मेरे जैसा है! मेरे अन्धतम हृदय के लाल,

क्या तू मेरे निरंकुश विचारों को समझता है और मेरी व्यापक भाषा बोलता है ?"

"हां, हम जोड़िया भाई हैं, रजनी ! क्योंकि तू अन्तरिक्ष पैदा करती है और मैं अपना दिल खोल रखता हूं ।"

: २५ :

चेहरे

मैंने हज़ारों आकृति वाला एक चेहरा देखा है। और ऐसा चेहरा भी देखा है जिसका एक ही रुख था। जैसे वह सांचे में ढला है।

मैंने एक चेहरा देखा है जिसकी चमक की तह में, मैंने उसकी भीतरी कुरूपता देख पाई थी। और ऐसा चेहरा देखा है जिसकी खूबसूरती देखने के लिए मुझे उसकी दमक का परदा उठाना पड़ा था।

मैंने एक बूढ़ा चेहरा देखा है जो शून्यता की रेखाओं से परिपूर्ण था, और मैंने ऐसा चिकना चेहरा भी देखा है जिस पर सब चीज़ें खुदी हुई थीं।

मैं (इन सब) चेहरों से (अच्छी तरह) वाकिफ हूँ। क्योंकि मैं उन्हें उस कपड़े (के भीतर) से देखता हूँ जो मेरी आंखें बुनती हैं, और उनके असल रूप को समझ लेता हूँ।

: २६ :

बड़ा समुद्र

मेरी आत्मा और मैं बड़े समुद्र में स्नान करनेके लिए गये। जब हम किनारे पर पहुँचे तो हम (किसी) गुप्त और निर्जन स्थान की खोज करने लगे।

जैसे हम (आगे) चले हमने देखा कि एक आदमी भूरी चट्टान पर बैठा हुआ अपने झोले से चुटकी-चुटकी नमक निकाल कर समुद्र में फेंक रहा है।

"यह निराशा-वादी है।" मेरी आत्मा ने कहा—"यहां हम स्नान नहीं कर सकते। आओ यह जगह छोड़ दें।"

हम आगे चलते गये और एक टापू के पास पहुँच गये। यहां हमने देखा कि एक आदमी सफेद चट्टान पर खड़ा है। उसके हाथ में एक जड़ाऊ डिब्बा है जिसमें से वह चीनी निकाल-निकाल कर समुद्र में फेंक रहा है।

"यह आशावादी है"—मेरी आत्मा ने कहा—"(इसलिए) वह भी हमारे नग्न-शरीर को न देख पावे।"

हम और आगे बढ़े। किनारे पर एक आदमी को देखा जो मरी मछलियां चुन-चुन कर बड़ी नर्म-दिली से उल्टा समुद्र में फेंका रहा था।

मेरी आत्मा ने कहा—"हम इसके सामने भी नहीं नहा सकते (क्योंकि) यह (एक) दयालु विश्व-मित्र है।"

हम और आगे बढ़े, देखा कि एक आदमी अपनी छाया

को रेत पर अंकित कर रहा है। लहरें आकर उसे मिटा देतीं हैं। लेकिन यह बराबर अपने कार्य में लगा हुआ है।

"यह रहस्यवादी है।" मेरी आत्मा ने कहा—"हमें उसे भी छोड़ देना चाहिए।"

आगे चले तो देखा एक आदमी समुद्र के झागों को एकत्र करके सेलखड़ी के प्याले में डाल रहा है।

"यह आदर्शवादी है।" मेरी आत्मा ने कहा—"यह हमारी नग्नता कदापि न देखने पावे।"

तब हम और आगे चले, अकस्मात एक आवाज़ सुनी (कोई चीख कर कह रहा है) "यही है समुद्र, यही है गहरा समुद्र, यही है विशाल और शक्तिशाली समुद्र, और जब हम उस आवाज़ के पास पहुँचे तो देखा कि एक आदमी समुद्र की तरफ पीठ किये खड़ा है और एक सीप को कान से लगाये उसकी आवाज़ सुन रहा है।

मेरी आत्मा ने कहा, "चलो आगे बढ़ो, यह यथार्थवादी है। जो किसी बात (के रहस्य) को पूरी तरह न समझने पर उस से मुँह मोड़ लेता है। और उस विषय के एक टुकड़े पर अपना ध्यान केन्द्रित कर देता है।"

इसी तरह आगे बढ़ते गये, (थोड़ी दूर पर) चट्टानों के बीच एक आदमी को रेत में सिर छिपाये हुए देखा। मैंने अपनी आत्मा से कहा—"(निस्सन्देह)हम यहां स्नान कर सकते हैं क्योंकि यह हमें देख नहीं सकता।"

"नहीं"— मेरी आत्मा ने कहा—"यह तो उन सबसे

ख़तरनाक है। क्योंकि यह उपेक्षा करता है।"

तब मेरी आत्मा के मुख पर बड़ी निराशा छा गई और उसने (करुण स्वर में) कहा—"हमें यहां से चलना चाहिए क्योंकि यहां कोई ऐसा गुप्त और एकान्त स्थान नहीं है, जहां हम स्नान कर सकें। मैं उस हवा को अपनी सुनहरी जुल्फों से न खेलने दूँगी और न उस हवा में अपने सफ़ेद सीने को खोलूंगी और न उस प्रकाश को अपनी पवित्र नग्नता उघारने दूँगी।"

तब हम उस बड़े समुद्र को छोड़ कर दूसरे विशाल सागर की खोज करने चल पड़े।

: २७ :

सूली पर

मैंने लोगों से चिल्ला कर कहा—"मैं सूली पर चढ़ूंगा।"

उन्होंने कहा—"हम तुम्हारा खून अपनी गरदन पर क्यों लें।

मैंने जवाब दिया—"तुम पागलों को सूली पर चढ़ाये बिना किस तरह उन्नति कर सकते हो।"

उन्होंने मेरी बात मान ली और मुझे सूली पर चढ़ा दिया गया। सूली पर चढ़ने से मुझे शांति मिली।

और जब मैं पृथ्वी और आकाश के बीच लटक रहा था तो उन्होंने मुझे देखने के लिए, अपने सिर ऊपर उठाये। इस तरह उनका सिर ऊंचा हुआ। (वे उन्नत हुए) क्योंकि इससे पहले उनका सिर कभी ऊपर न उठा था।

लेकिन जब वे मेरी तरफ सिर उठाये देख रहे थे तो उनमें से एक ने पूछा—"तुम किस कर्म का प्रायश्चित्त कर रहे हो।"

दूसरे ने चिल्ला कर कहा—"तुमने किस उद्देश्य से अपना बलिदान किया।"

तीसरे ने कहा—"क्या तेरा यह ख्याल है कि तू इस कीमत (कुरबानी) से इस दुनियां में बड़ाई (शोहरत, प्रसिद्धी) हासिल करेगा।"

तब एक चौथे ने कहा—"देखो यह कैसा मुसकरा रहा है। क्या कोई मनुष्य इतनी बड़ी तकलीफ (ज़ुल्म) को भी माफ कर सकता है।"

मैंने इन सब को जवाब देते हुए कहा—

"तुम सिर्फ इतना ही याद रक्खो कि मैं मुसकराता था। मैंने कोई प्रायश्चित्त नहीं किया और न मैंने कोई कुरबानी (बलिदान) की और न मैं कीर्ति का इच्छुक हूँ। तुमने कोई ऐसा अपराध नहीं किया जिसे मैं क्षमा करूं। मैं प्यासा था और मैंने तुमसे प्रार्थना की कि तुम मेरा खून मुझे पिला दो। क्यों कि पागल की प्यास उसके खून के सिवा और किसी चीज़ से नहीं बुझ सकती। मैं गूंगा था सो मैंने मुंह के लिए जख्म मांगे। मैं इन्हीं (मृतलोक की) दिन-रातों में कैद था। इसलिए मैंने इनसे बड़े (बृहत्) दिन-रातों का दरवाजा तलाश कर लिया।"

"लो, अब मैं जाता हूँ—जिस तरह और सूली चढ़ने वाले चले गये। यह न समझना कि हम सूली चढ़ने से उकता गये हैं।"

क्योंकि हम इससे बड़े आकारों और इससे बड़ी पृथ्वी के बीच, इससे बड़े मनुष्य-समुदाय के द्वारा बार-बार सूली पर चढ़ते रहेंगे।

: २८ :

ज्यो ति षी

मैंने और मेरे मित्र ने एक अन्धे आदमी को मन्दिर की छाया में बैठे हुए देखा। मेरे मित्र ने मुझे बताया कि—"यह हमारे देश का सबसे बुद्धिमान मनुष्य है।"

मैं अपने मित्र को छोड़कर उसके पास गया और उसे प्रणाम किया। फिर हम बातचीत करने लगे। कुछ देर बाद मैंने पूछा—"माफ कीजिये, आप कब से अन्धे हुए।"

उसने जवाब दिया—"मैं तो जन्म से अन्धा हूँ।"

मैंने पूछा—"आपने किस शास्त्र का अध्ययन किया है?"

वह बोला—"मैं ज्योतिषी हूँ।" फिर उसने अपनी छाती पर हाथ रखते हुए कहा—"हां मैं आकाश-मंडल के समस्त सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्रों का निरीक्षण करता रहता हूँ।"

: २६ :

बड़ी तमन्ना

यहां मैं अपने भाई "पहाड़" और अपनी बहन "जल-राशि" के बीच बैठा हूं।

हम तीनों एकांत में एक हैं। और जिस प्रेम ने हमें आपस में बांध रक्खा है वह गहरा, सबल और अनोखा है। उसकी गहराई मेरी बहन की गहराई से भी अधिक है। उसकी शक्ति के सामने मेरे भाई की शक्ति तुच्छ है। और वह मेरे पागलपन से भी ज्यादा निराली है।

शताब्दियां बीत चुकी हैं। जब कि पहले प्रातःकाल में हम एक-दूसरे से परिचित हुए और यद्यपि हम कितनी ही दुनियाओं की पैदायश, जवानी और मृत्यु के दृश्य देख चुके हैं, फिर भी, हम जवान और उत्साहपूर्ण हैं। यद्यपि हमारे मन में इच्छायें और अभिलाषायें बनी हुई हैं, लेकिन फिर भी हम अकेले हैं। कोई पास नहीं आता। यद्यपि हम कालान्तर से एक-दूसरे से लिपटे हुए हैं, फिर भी हमें चैन नहीं। दबाई हुई ख्वाहिश और रोके हुए जोश को चैन कहां!

यह अग्निदेव कहां से आयेगा, जो मेरी बहन के बिस्तर को गर्म करेगा और वह कौन-सी लहर है जो मेरे भाई के दिल को ठण्डा करेगी। और वह कौनसी सुन्दरी है जो मेरे हृदय पर राज्य करेगी।

रात के सन्नाटे में मेरी बहन अग्निदेव की याद में बड़बड़ाती
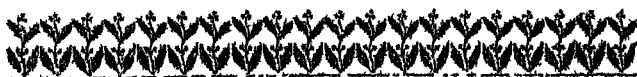
रहती है। और मेरा भाई ठण्डक पहुँचाने वाली देवी को पुकारता रहता है। लेकिन मैं नींद की हालत में किसे पुकारता हूँ, मुझे मालूम नहीं।

यहां मैं अपने भाई "पहाड़" और बहन "जल-राशि" के बीच बैठा हूँ। हम तीनों एकांत में एक हैं। और जिस प्रेम ने हमें एकता में बांध रक्खा है, वह गहरा, मज़बूत और अनोखा है।

: ३० :

घास के तिनके ने कहा

घास के एक तिनके ने पतझड़ के गिरे हुए पत्ते से कहा—"तुम गिरते वक्त शोर क्यों करते हो। तुम्हारे इस शोर से मेरे सुख-स्वप्न में बाधा पड़ती है।"

पत्ता क्रोधित होकर बोला—"ओ नीच, अधोगति को प्राप्त, गान-विद्या से वञ्चित चिड़चिड़े तिनके जब तू ऊँचे वातावरण में नहीं रहता तो तू राग की लय को क्या जाने!"

तब पतझड़ का पत्ता ज़मीन पर पड़ गया और सो गया। जब बहार का मौसम आया तो उसकी आंख खुली। परन्तु अब वह (स्वयं ही) घास का तिनका बन चुका था।

फिर पतझड़ का मौसम आया। तिनका जाड़े की मीठी नींद सो रहा था कि चारों तरफ से उस पर पत्तियां झड़ने लगीं। तब वह गुनगुनाया।

"यह पतझड़ के पत्ते कितना शोर मचाते हैं और मेरे शिशिर-स्वप्न में बाधा डालते हैं!"

: ३१ :

आँख

एक दिन आँख ने कहा—"मैं इन घाटियों के परे नीले धुन्द से ढके, पहाड़ों को देख रही हूँ। क्या वह खूबसूरत नहीं ?"

कान ने सुना और थोड़ी देर के बाद कहा—"लेकिन पहाड़ है कहां ? मुझे तो वह सुनाई नहीं देता !"

तब हाथ ने कहा—"मैं इसे अनुभव करते और छूने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहा हूँ। मुझे कोई पहाड़ नहीं मिलता।"

नाक ने कहा—"यहां कोई पहाड़ नहीं, क्योंकि मुझे उसकी बू (गन्ध) नहीं आती।"

तब आंख दूसरी तरफ देखने लगी और वे (तीनों) उसके आश्चर्यजनक अनुभव की चर्चा करने लगे।

उन्होंने कहा—"मालूम होता है, आंख को अवश्य कुछ भ्रम हो गया है।"

: ३२ :

दो विद्वान

अफ़कार नामक एक प्राचीन नगर में किसी समय दो विद्वान रहते थे। उनके विचारों में बड़ी विभिन्नता थी। एक-दूसरे की विद्या की हंसी उड़ाते थे। क्योंकि उनमें से एक आस्तिक था और दूसरा नास्तिक।

एक दिन दोनों बाज़ार में मिले और अपने अनुयायिओं की उपस्थिति में ईश्वर के अस्तित्व पर बहस करने लगे। घण्टों बहस करने के बाद एक-दूसरे से अलग हुए।

उसी शाम को नास्तिक मन्दिर में गया और वेदी के सामने सिर झुका कर अपने पिछले पापों के लिए क्षमा-याचना करने लगा। ठीक उसी समय दूसरे विद्वान ने भी, जो ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता था, अपनी पुस्तकें जला डालीं। क्योंकि अब वह नास्तिक बन गया था।

: ३३ :

जब मेरा शोक पैदा हुआ

जब मेरा शोक पैदा हुआ (तो) मैंने बड़े यत्न से पाला, और बड़ी सावधानी से उसकी रक्षा की।

और मेरा शोक अन्य सब जीव-धारियों की तरह बढ़ने लगा। शक्तिशाली, सुन्दर और हर्षपूर्ण।

हम एक-दूसरे को प्यार करते थे। मैं और मेरा शोक। और हम अपने चारों तरफ की दुनियां को मोहब्बत करते थे। क्योंकि शोक के दिल में बड़ी करुणा थी। और मेरा हृदय भी 'शोक' के कारण दया से भर गया था।

और जब मैं और मेरा 'शोक' आपस में बात करते थे तब हमारे दिनों को पंख निकल आते थे और हमारी रातें स्वप्नवत् हो जाती थीं। क्योंकि शोक बात करने में बड़ा निपुण था और मैं भी इसकी वजह से बातूनी होगया था।

और जब हम दोनों एक साथ गाते थे। मैं और मेरा शोक; तो हमारे पड़ौसी अपनी खिड़कियों में बैठ कर सुनते। क्योंकि हमारे गीत समुद्र की तरह गहरे थे। और हमारे स्वरों में आश्चर्यजनक स्मृतियां छिपी हुई थीं।

और जब मैं और मेरा 'शोक' साथ-साथ टहलते, तो लोग हमें प्यार की दृष्टि से देखते और हमारे सम्बन्ध में आहिस्ता-आहिस्ता मीठे शब्द कहते। और कुछ लोग ऐसे भी थे जो हमसे ईर्षा करते थे। क्योंकि मेरा शोक श्रेष्ठ था। और मुझे भी (अपनी

श्रेष्ठता का) गर्व था ।

किंतु अन्य सभी नाशवान वस्तुओं की तरह एक दिन मेरा शोक भी चल बसा और मैं मातम करने के लिए अकेला रह गया ।

और (अब) मैं बोलता हूँ तो मेरे शब्द मेरे कानों को मार मालूम होते हैं ।

और मैं गाता हूँ तो मेरे पड़ौसी सुनने नहीं आते और जब मैं रास्ते में चलता हूँ तो कोई मेरी ओर आँख उठाकर नहीं देखता ।

अब सिर्फ नींद में मुझे यह दर्द भरी आवाज़ सुनाई देती है--"देखो, यह वह मनुष्य पड़ा है जिसका 'शोक' मर चुका है।"

: ३४ :

जब मेरा हर्ष पैदा हुआ

जब मेरा हर्ष पैदा हुआ तो मैंने उसे गोद में उठा लिया और छत पर खड़ा होकर पुकारने लगा—"आओ, मेरे पड़ोसियो! देखो, आज मेरे घर 'हर्ष' का जन्म हुआ है। आओ, इस आनन्द-दायक वस्तु को देखो जो सूर्य के प्रकाश में हंस रही है।

किंतु मेरा एक भी पड़ौसी मेरे 'हर्ष' को देखने के लिए नहीं आया। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।

सात पूर्णिमाओं तक मैं हर रोज़ छत पर खड़े होकर अपने हर्ष की मुनादी करता रहा। परन्तु किसी ने इस तरफ़ ध्यान न दिया। बस मैं और मेरा हर्ष बिल्कुल अकेले रहे। न किसी ने उसकी तलाश की और न उसे कोई देखने के लिए आया।

इस कारण मेरा हर्ष निढाल होगया। क्योंकि न तो मेरे सिवा अन्य किसी दिल ने उसकी दिलजोई की, न किसी अन्य के ओठों ने उसके ओठों को चूमा।

परिणाम यह हुआ कि अकेले रहने के कारण एक दिन मेरा हर्ष भी चल बसा।

और अब मैं अपने मृत 'शोक' की याद में अपने मृत 'हर्ष' को याद करता हूँ।

लेकिन अफ़सोस! यह स्मृति एक पतझड़ के पत्ते की तरह है जो हवा में एक क्षण के लिए ज़रा गुनगुनाती है और फिर हमेशा के लिए खामोश होजाती है।

: ३५ :

परिपूर्ण संसार

ऐ, खोई हुई आत्माओं के देवता ! तू जो खुद देवताओं के बीच खोया हुआ है—मेरी आवाज़ सुनो !

हम पागल और आवारा रूहों की निगरानी करने वाली शिष्ट नियति ! मेरी सुनो,

मैं एक परिपूर्ण जाति में रहता हूँ। मैं, जो एक अपूर्ण हूँ।

मैं, मनुष्यता की अस्तव्यस्तता और बिखरे हुए तत्वों का धुँधला संग्रह। मैं पूर्णता-प्राप्त संसार में विचरता हूँ। और उन लोगों में घूमता हूँ जिनके कानून मुकम्मिल हैं और व्यवस्थाएँ सुथरी हैं, जिनके विचार चुने हुए हैं, जिनके स्वप्न व्यवस्थित हैं, और जिनकी कल्पनाएं भली प्रकार लिखी हुई हैं।

ऐ ईश्वर! जिनकी नेकियां नपी हुई और गुनाह तुले हुए हैं, इसके सिवा वह अनगिनत चीज़ें जो पाप-पुण्य से धुन्द में घटित होती हैं, वे तक लिखी जाती हैं और उनकी विषय-सूची तैयार होती है। यहां दिन और रात चाल-चलन के मौसमों में बांटी जाती है। और नपे-तुले नियमों से शासन होता है।

खाना, पीना, सोना अपना तन ढकना और, समय पर थकावट महसूस करना।

काम करना, खेलना, गाना, नाचना और जब घड़ी-घण्टा बजावे, तब विश्राम करना।

एक विशेष प्रकार से विचार करना, एक खास हद तक

महसूस (अनुभव) करना और क्षितिज पर एक विशेष नक्षत्र के उदय होने पर सोचने और अनुभव करने से विमुख हो जाना। एक मुसकराहट के साथ पड़ौसी को लूटना, हाथ की शान से लचका-कर, खैरात देना, चतुराई से (एक विशेष उद्देश से) किसी की प्रशंसा करना और चालाकी से किसी पर दोषारोपण करना। एक शब्द में किसी को बरबाद कर देना और एक सांस में किसी को जिला देना और जब दिन भर का काम खत्म हो जावे तो हाथ धो लेना, एक निश्चित नियम के अनुसार प्रेम करना और एक निर्धारित कल्पना से अपनी आत्मा का मनोरंजन करना। बन-ठन के देवता की पूजा करना और बड़ी होशियारी के साथ शैतान से मेल-जोल करना, आखिर इन सब बातों को इस तरह भूल जाना मानो स्मृति नष्ट हो गई हो।

किसी विशेष उद्देश से कल्पना करना। गम्भीर चिन्तन के साथ विचार करना। मधुरता के साथ प्रसन्न रहना। शराफत से सहन करना और आखिर इस नियत से प्याला खाली कर देना कि कल उसे फिर भरा जावे।

हे ईश्वर! यह सब बातें पहले ही से सोची जाती हैं। पक्के इरादे से पैदा की जाती हैं। बड़ी सावधानी से इनका पोषण होता है। नियमों से इनका शासन होता है। तर्क इन्हें रास्ता दिखलाता है। और एक निश्चित विधि से इनका बध होता है और दफनाया जाता है। और इन खामोश कब्रों पर भी, जिनकी जगह मनुष्य की आत्मायें हैं, निशान और अंक लगा दिये जाते हैं।

यह परिपूर्णता को पहुँचा हुआ संसार है। उत्तमोत्तम

जगत है। महान आश्चर्य की दुनिया है। ईश्वर के बाग़ का पका फल है और विश्व की सर्वोत्कृष्ट कल्पना है।

किन्तु हे ईश्वर, मैं यहां क्यों हूँ। मैं असफल इच्छाओं का कच्चा बीज, एक सिर-फिरा तूफ़ान, न पूर्व की तलाश है न पश्चिम की। एक जलते हुए तारे का अंश-मात्र!

ऐ खोई हुई आत्माओं के ईश्वर! तू जो देवताओं के हजूम में खोया हुआ है, बोल, "मैं यहां क्यों हूँ!"